# स्वयं से संवाद

जे. कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के आलोक में जीवन का अन्वेषण

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया

वर्षाऋतु, 2018


# बोधि समय पर निर्भर नहीं है

अंतर्दृष्टि बुद्धि पर निर्भर नहीं करती, यह ज्ञान पर निर्भर नहीं है। यह किसी प्रकार की स्मृति पर निर्भर नहीं है और यह समय पर निर्भर नहीं है...समय, स्मृति, याद, कारण – जब वे रहते ही नहीं तभी पूर्ण अंतर्दृष्टि होती है। सर, जैसे रात के समय दो जहाज एक दूसरे के पास से गुज़र रहे हों, एक दूसरे से कहता है, ''यह बात है!'' और गुज़र जाता है।

सहभागी– जहाँ तक मैंने समझा है, आप कहते हैं कि जीवन का कोई प्रयोजन अथवा लक्ष्य नहीं है इसलिए वहाँ आगे जाने के लिए राह नहीं है। इस कारण हर व्यक्ति, हर पल अपना ही सामना करता है। यदि उस पल को समझना है तो वही पल कार्य, ज्ञान और इच्छा का पल है। क्या यह समझना सही है?

कृष्णमूर्ति– मैं कहना चाहूँगा कि हम इसकी चर्चा नहीं कर रहे हैं कि क्या सही है, क्या सही नहीं है। सर, यह ऐसा विषय है जिस के लिए बहुत अधिक जाँच-पड़ताल की आवश्यकता है।

सह०– अगर आप कहते हैं कि यह मामला सही या गलत का नहीं है, तब तो आप उन लोगों के लिए जो कि इसे समझना चाहते हैं, एक समस्या पैदा कर रहे हैं।

कृ०– नहीं, मैं तो इसके विपरीत कह रहा हूँ, पंडितजी तथा हम सभी, मेरे साथ जाँच करने जा रहे हैं। मैं नहीं कहता-वह सही है, यह गलत है। बल्कि हम साथ-साथ इस विषय में प्रवेश करने जा रहे हैं।

सह०– ऐसा कोई आदमी नहीं हो सकता जो कि यह फैसला न करे कि क्या सही है और क्या गलत है, क्या अच्छा है अथवा क्या अच्छा नहीं है?

कृ०– हम इस बात पर आएंगे। मैं ऐसा नहीं कहता कि यह अच्छाई नहीं है। वह अच्छाई भले ही आप की अच्छाई से, मेरी अच्छाई से पूरी तरह भिन्न हो। इसलिए आइए हम लोग यह पता लगाएँ कि क्या

सचमुच अच्छा है-न आपका अथवा मेरा, बल्कि वह जो कि अच्छा है...।

सह०– अपने आप में।

कृ०– हाँ।

सह०– आप वस्तुओं के देखने के तरीके अथवा किसी के दार्शनिक दृष्टिकोण में एक अनिश्चय ला रहे हैं।

कृ०– हाँ, अगर आप निश्चय से शुरू करते हैं तो आप अनिश्चय पर पहुँचते हैं।

सह०– यह तो अजीब पहेली सा लगता है कि—आप निश्चय से आरंभ करें तो अनिश्चय पर समाप्त होता है।

कृ०– सचमुच, यह रोज़ का जीवन है। अतः सर, आपने ऐसा सवाल उठाया जिसके भीतर समय, विचार, कार्य समाया है, तो क्या हम पहले इस सवाल पर आएँ कि समय क्या है? बौद्धों के अनुसार नहीं, न कि किसी शास्त्र के अनुसार, बल्कि समय क्या है? वे इसको एक तरह से समझाएँगे, वैज्ञानिक कहेंगे कि यह छोटे-छोटे कार्यों, विचारों की कड़ी आदि है, यह लगातार सिलसिला है। अथवा आप कहें कि ठीक है, समय मृत्यु है, समय जीना है अथवा विचार समय है। ठीक? इसलिए फिलहाल बुद्ध सहित अन्य लोगों ने, या मैंने जो कहा है या नहीं कहा है उसे अलग रखें, उसे धो-पोंछ डालें और कहें कि समय क्या है?

क्या हमारे जीवन में यही अकेली समस्या है? समय—न कि घटनाओं का सिलसिला, लेकिन पैदा होना, बड़ा होना, मरना—अतीत, भविष्य और वर्तमान के रूप में समय? हम समय में जीते हैं, वह पल जब कि हम आशा करते हैं, वह समय है—मैं होने की आशा करता हूँ, मैं कुछ बनना चाहता हूँ। मैं प्रबुद्ध होने की आशा करता हूँ—इन सब में समय निहित है। ज्ञान प्राप्त करने में समय लगता है, और सारा जीवन, जन्म से लेकर मृत्यु


पृष्ठ 3 से जारी...

## कृष्णमूर्ति वीडियो हिंदी सबटाइटल्स के साथ

1. Washington DC 1985 Talk 1 एवं Talk 2.
2. Love and Freedom: Turning Point Series Talk 6
3. Krishnamurti with Rishi Valley Students 1984 Talk 3
4. Why there is such a chaos in the world? Saanen1980

इन्हें मंगवाने के लिए सम्पर्क करें :
कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001,
ईमेल : studycentre@rajghatbesantschool.org
फोन : 0542–2441289

कृष्णमूर्ति से संबंधित वेबसाइट :
www.jkrishnamurtionline.org
www.kfionline.org
www.jkrishnamurti.org

## हिंदी में उपलब्ध जे. कृष्णमूर्ति की कुछ महत्त्वपूर्ण पुस्तकें

जीवन एक अन्वेषण
अंतर्दृष्टि का प्रश्न
ज्ञात से मुक्ति
प्रथम और अंतिम मुक्ति
अंतिम वार्ताएं
शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य
स्कूलों के नाम पत्र
सुखी वही जो कुछ भी नहीं
ईश्वर क्या है?
आपको अपने जीवन में क्या करना है?
आज़ादी की खोज
प्रेम क्या है?, अकेलापन क्या है?
सत्य और यथार्थ
मन क्या है?
ये रिश्ते क्या हैं?
ध्यान
जीवन और मृत्यु
शिक्षा क्या है?
सोच क्या है?

पुस्तकों को मंगवाने के लिए सम्पर्क करें :
कृष्णमूर्ति स्टडी सेंटर, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221001
ईमेल : studycentre@rajghatbesantschool.org

## इंटरनेशनल रिट्रीट राजघाट : जनवरी 2019

विगत दो वर्षों की तरह इस वर्ष भी इंटरनेशनल अध्ययन रिट्रीट का आयोजन कृष्णमूर्ति सेंटर, राजघाट में हो रहा है। संवाद का माध्यम अंग्रेजी है। इस बार का थीम है, Self-knowledge and the Transformation of Consciousness (स्वबोध और चेतना का रूपान्तरण)।

***"स्वयं को समझना कोई परिणाम, कोई चरम अवस्था नहीं है; वह है प्रतिक्षण स्वयं को पारस्परिक सम्बन्ध के दर्पण में देखना –संपत्ति से, वस्तुओं से, व्यक्तियों से, और विचारों से अपने सम्बन्ध के दर्पण में।"***

***('प्रथम और अंतिम मुक्ति' से)***

इन कार्यक्रमों में सहभागिता के लिए ऑन लाइन बुकिंग हेतु इस वेबसाइट पर आएँ :
www : rajghatbesantschool-org/jk/rajghat-study-centre
email : studycentre@rajghatbesantschool-org

## अध्ययन रिट्रीट : सितंबर 2018

On Conditioning and Self-education (संस्कारबद्धता और स्व-शिक्षण) थीम पर आधारित यह अध्ययन रिट्रीट 26 सितंबर 2018 को प्रारंभ होगी तथा 30 सितंबर 2018 को इसका समापन होगा। परिसंवाद का माध्यम अंग्रेजी तथा हिंदी है।

***"यहाँ पर हम कह रहे हैं : कोई 'अथॉरिटी' नहीं है, कोई गुरु नहीं है, खुद के बारे में आपको अपने आप सीखना होगा। और खुद के बारे में सीखने के लिए, आपको देखना होगा खुद को, कैसे आप बर्ताव करते हैं दूसरे के साथ, आप चलते कैसे हैं..."***

***('सत्य और यथार्थ' से)***

### के. एफ़. आई. द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका परिसंवाद (त्रैमासिक)

सदस्यता शुल्क :
एक वर्ष के लिए : रु. 150
पाँच वर्ष के लिए : रु. 600
दस वर्ष के लिए : रु. 1000

### के. एफ़. आई. द्वारा प्रकाशित हिंदी न्यूज़लैटर स्वयं से संवाद (वर्ष में दो अंक)

निःशुल्क

संपर्क सूत्र :
कृष्णमूर्ति सेंटर
के एफ़ आई, राजघाट, वाराणसी–221001 (उ.प्र.)
ई मेल : studycentre@rajghatbesantschool-org
फोन : 6394 751 394

## वार्षिक पब्लिक गैदरिंग 2018, राजघाट, वाराणसी

कृष्णमूर्ति फाउंडेशन की वार्षिक पब्लिक गैदरिंग का आयोजन 31 अक्टूबर 2018 से 3 नवंबर 2018 तक के.एफ.आई. परिसर, राजघाट, वाराणसी में किया जा रहा है। सम्प्रेषण–संवाद का माध्यम मुख्यतः अंग्रेजी तथा साथ में हिंदी भी है। कृष्णमूर्ति की शिक्षाओं के आलोक में प्रतिवर्ष आयोजित किये जाने वाले इस विमर्श पर्व का केन्द्रीय विषय है : Crisis in Society and Individual Responsibility (समाज की संकटपूर्ण अवस्था एवं व्यक्ति का उत्तरदायित्व)

***"आप अपने आप को परितुष्ट कर लें, तो उससे क्या होता है? आप कोई संत बन बैठें, तो भी उसका क्या महत्त्व? दूसरी ओर, उस पुराने ढाँचे से यदि आप पूर्ण रूप से तिनका तोड़ लेते हैं, तो आप मनुष्य जाति की समग्र चेतना को प्रभावित कर पाते हैं।"***

***('सोच क्या है' से )***

तक—समय की समस्या है। ठीक? सर, क्या मैं अपने आप को स्पष्ट कर पा रहा हूँ? इसलिए वह क्या है जिसे हम समय कहते हैं?

सह०– इस बारे में आप अनेक बार कह चुके हैं पर, मैं कहना चाहता हूँ कि वह क्षण जो कि ज्ञान, कार्य, साथ ही इच्छा है—वह ऐसा क्षण है जिसमें समय नहीं है।

कृष्ण– क्या?

सह०– वे कहते हैं, वह क्षण, उस क्षण का जीना...

कृष्ण– रुकिए, रुकिए, क्या आप उस काल को बाकी से अलग कर सकते हैं?

सह०– अवधान ('अटेंशन') या अवलोकन ('आब्ज़र्वेशन') के उस पल में समय नहीं है।

कृ०– अवलोकन और अवधान से आपका क्या मतलब है? विश्लेषण के लिए साफ करें। यदि हम एक दूसरे को समझना चाहते हैं तो हम इन दोनों शब्दों के अर्थ के बारे में स्पष्ट हों : अवधान और अवलोकन। आप जब अवलोकन करते हैं तो वस्तुतः क्या होता है?—सिद्धान्त रूप में नहीं। आप जब उस पेड़, उस पक्षी, उस स्त्री, उस आदमी को देखते हैं तो क्या होता है?

सह०– अवलोकन के उस पल में, बशर्ते कि वह वास्तविक अवलोकन हो तो..

कृ०– क्या ऐसा है? मैं पूछ रहा हूँ कि वे जब अवलोकन शब्द का इस्तेमाल करते हैं तो उससे उनका क्या आशय होता है? मेरा कुछ आशय हो सकता है; उनका कुछ दूसरा अर्थ हो सकता है। वे कुछ अर्थ लगा सकती हैं।...

सह०– पर, पंडित जी, आप पूछ रहे हैं कि अवलोकन से उनका क्या अर्थ होता है?

कृ०– और अवधान से उनका क्या आशय है?

सह०– आपने इस बारे में बहुत कुछ कहा है, हम उसे समझते हैं, अतः हमें आपके प्रश्न का उत्तर नहीं देना है (हँसी)।

कृ– सर, क्या मैं एक प्रश्न पूछूँ? क्या हम चर्चा आरम्भ करें, 'डायलॉग' करें, एक शब्द के बारे में बातचीत जो कि सचमुच बहुत ही अच्छा है : 'डेलिबरेशन'—विचार-विमर्श? आप इस शब्द का अर्थ समझते हैं? डेलिबरेट का अर्थ है कि आप और मैं चर्चा करते हैं, यह शब्द 'लिबरा' से आया है जिसका ग्रीक अर्थ है तौलना, मापना। आपके राशिचक्र में तुला यही वस्तु है। इसी 'लिबरा' से लिबरेट शब्द आया है। साथ ही यह आया है 'डेलिबरेर' शब्द से जिसका इटालियन में अर्थ होता है : बैठना, बात करना, परस्पर परामर्श, साथ-साथ मापना। यह ऐसा नहीं है कि आप एक राय दे रहे हैं और मैं दूसरी राय दे रहा हूँ, बल्कि हम दोनों साथ-साथ परामर्श कर रहे हैं, हम दोनों माप रहे हैं क्योंकि हम उसकी सचाई खोज रहे हैं। न कि मैं उसका पता लगाऊँगा और आप नहीं, और तब मैं आपको बताऊँगा—ऐसा (भाव) उस शब्द में नहीं है। सर, रोम में सिस्टीन चैपेल, वैटिकन में जब पोप का चयन होता है तो वे विचार-विमर्श करते हैं। दरवाज़े बन्द रहते हैं, कोई बाहर नहीं जा सकता, उनके लिए शौचालय की, जलपान और भोजन सब की कुछ व्यवस्था होती है, एक पखवारे या कुछ दिनों के लिए। उन निर्धारित दिनों में उन्हें अवश्य निर्णय करना है। इसे कहते हैं डेलिबरेशन—विचार-विमर्श। तो क्या हम दोनों शुरू करें, इस तरह जैसे कि हम कुछ नहीं जानते। (हँसी)

सह०– पंडित जी के लिए यह कठिन है।

कृ०– यह कठिन नहीं है। मैं कुछ नहीं जानता, हमारा ज्ञान सिर्फ स्मृति है। इसमें क्या खास बात है? मैं कह रहा हूँ, ज्ञान संसार में सबसे बड़ा खतरा हो सकता है, यह सबसे बड़ी बाधा बन सकता है, ज्ञान को बढ़ाने के लिए हम उसमें जोड़ते रहते हैं, वैज्ञानिक जोड़ रहे हैं और जिसमें जोड़ा जाता है वह हमेशा सीमित है।

सह०– सचमुच। यदि वह पूर्ण हो तो उसमें आप कुछ जोड़ नहीं सकते।

कृ०– हाँ। इसीलिए आपका ज्ञान हमेशा सीमित है और यदि हम उसी बँधी सीमा से चर्चा करते हैं तो आप सीमा में ही समाप्त करेंगे।

सह०– और तथाकथित निश्चितता वह सीमा है।

कृ०– हाँ, सीमा।

सह०– हमने आपसे बहुत कुछ सुना है और कुछ चीजें समझीं, परन्तु यदि वह समझ अधिक गहरे स्तर पर होनी हो तो

''मैंने यह कभी नहीं कहा कि ईश्वर नहीं है। मैंने कहा है कि ईश्वर का अस्तित्व केवल उसी रूप में है जिसमें वह आपके भीतर प्रकट हुआ है। लेकिन मैं ईश्वर शब्द का प्रयोग नहीं करने वाला हूँ... मैं इसे जीवन कहना चाहूंगा।''

*—'जे. कृष्णमूर्ति : एक जीवनी' से*

आप जैसे की ज़िम्मेदारी है कि वह जानकारी करा दे क्योंकि हम अलग-अलग स्तरों पर हैं।

कृ०- ठीक है, ठीक है, लेकिन यह आदमी कहता है, 'के' का कहाना है कि आप जहाँ बँधे हैं, उसे छोड़ें, आइए हम साथ-साथ बहें।

सह०- हम साथ-साथ परामर्श कैसे कर सकते हैं जब कि हम दोनों भिन्न-भिन्न स्तरों पर हैं।

कृ०- मैं इसे नहीं मानता। मैं यह नहीं मानता कि हम दो स्तरों पर हैं।

सह०- आपके खिलाफ हमारी शिकायत है कि...

कृ०- कि मैं घटिया सर्जन हूँ (हँसी)।

सह०- डॉक्टर, हाँ। क्योंकि, सभी कठिनाइयाँ और संघर्ष बाहर हैं। मेरी तरह के लोग जिन्हें आपके पास आने का सौभाग्य है, वे कुछ प्रकाश तो पाते हैं पर डाक्टर यह नहीं बताता कि जो वस्तुएँ बाहर हैं उनका किस प्रकार सामना किया जाए—और उन कठिनाइयों का समाधान कर लिया जाए।

कृ०- तो, आप यहाँ पहले बाहर की कठिनाइयों को हल करना चाहते हैं, उसके बाद भीतर की ओर पहुँचना चाहते हैं। क्या ऐसा है?

सह०- नहीं, मैं उन दोनों को एक साथ हल करना चाहता हूँ।

कृ०- मैं इस विभाजन को नहीं मानता।

सह०- हाँ, मैं इसे मानता हूँ।

कृ०- संसार 'मैं' है, मैं संसार हूँ, अब वहाँ से हम किस प्रकार समस्या का समाधान कर सकते हैं?

सह०- हमको कह लेने दीजिए, मैं बाहरी और भीतरी वस्तुओं में अन्तर नहीं करता।

कृ०- आप पहले इस बारे में निश्चित हो जाएँ। क्या आप सचमुच वैसा देखते हैं या सिद्धान्त रूप में?

सह०- मेरे लिए यह सैद्धान्तिक है।

कृ०- सर, सबसे पहले मेरे लिए सिद्धान्त की कोई कीमत नहीं है। मुझे क्षमा करें, संसार में जो हो रहा है, उसे मैं देख रहा हूँ—युद्ध, राष्ट्रीयताएँ, हत्या, सभी भयंकर चीज़ें हो रही हैं—सचमुच हो रही हैं। मैं कल्पना नहीं कर रहा हूँ, मैं देखता हूँ, ऐसा मेरे सामने हो रहा है। अब इनको किसने उत्पन्न किया?

सह०- मनुष्यों ने।

कृ०- क्या आप सहमत हैं कि हम सबने ही इन्हें उत्पन्न किया है?

सह०- हाँ, सचमुच।

कृ०- बिल्कुल ठीक, अतः यदि हम सबने इसे उत्पन्न किया तो हम उसे बदल सकते हैं। तो आप किस तरह परिवर्तन लाएँगे? सर, हाल ही में मैं न्यूयार्क में एक वैज्ञानिक, एक डॉक्टर से मिला जो कि दार्शनिक हो गये हैं। उन्होंने कहा—यह सब सिर्फ बात भर है, असली सवाल है : क्या मस्तिष्क-कोशिकाएँ अपने में परिवर्तन लाएँगी—औषधियों द्वारा नहीं, विभिन्न आनुवांशिक प्रक्रियाओं द्वारा नहीं—क्या मस्तिष्क कोशिकाएँ खुद कहती हैं कि यह गलत है—इसे बदलो। सर, क्या आप समझते हैं? क्या मस्तिष्क कोशिकाएँ बिना किसी दबाव, बिना औषधि के जो कुछ उन्होंने उत्पन्न किया, क्या उसे देखती और कहती हैं : यह गलत है—इसे बदल डालो।

सह०- सर, आप मस्तिष्क और मन में भेद करते हैं।

कृ०- हाँ, यह मूर्खतापूर्ण हो सकता है पर मैंने इनमें अन्तर कर रखा है क्योंकि मस्तिष्क हमारे संवेदनों का प्रमुख केन्द्र है।

सह०- सर, परसों भी मेरा प्रश्न था, क्या हम उस परिवर्तन की प्रतीक्षा करें।

> ''जब आप जीवन से प्रेम करते हैं और उस प्रेम को हर चीज से पहले रखते हैं और उसी प्रेम से सब कुछ आँकते हैं, न कि अपने भय से, तब वह जड़ता जिसे आप नैतिकता कहते हैं समाप्त हो जाती है।''
>
> —*'जे. कृष्णमूर्ति : एक जीवनी' से*

कृ०- आप नहीं कर सकते। वह जारी रहेगा।

सह०- क्या ऐसा अपने आप हो जाएगा?

कृ०- नहीं।

सह०- तो फिर हम उसके लिए कोशिश करें?

कृ०- सर, आप क्या करेंगे; आप देखते हैं कि परिवर्तन जरूरी है, ठीक?

सह०- हाँ, हरएक इससे सहमत है।

कृ०- अब कौन उसे बदलेगा? कोशिकाओं में, सिर्फ विचारों में नहीं। मस्तिष्क की कोशिकाओं में ही अतीत की सारी यादें रहा करती हैं, क्या वे कोशिकाएँ बिना दबाव, बिना प्रभाव, बिना रसायन कह सकती हैं कि उसका यह अन्त है, मैं बदलूँगी?

सह०- नहीं, यदि वहाँ कोई प्रभाव, कोई दबाव नहीं है तो इसका मतलब है कि यह

अपने आप हो रहा है।

कृ०– नहीं, राधाजी, इसे सुनें। मस्तिष्क कोशिकाएँ सभी स्मृतियों, सभी दबावों, सभी शिक्षा, सभी अनुभव, सब कुछ को रखा करती हैं—यह है ज्ञान केन्द्र, ठीक?

सह०– हाँ, यह (ज्ञान से) दबा हुआ है।

कृ०– पचीस लाख वर्षों के ज्ञान से लदा हुआ। हमने सब कुछ प्रयास किए–रसायन, पीड़न, खोपड़ी के भीतर परिवर्तन लाने के लिए हर प्रकार का अनुभव, हम सफल नहीं हुए। यहाँ आनुवंशिक–इंजीनियरी है, इस भीतर को बदलने के लिए हर प्रकार का प्रायोजन है पर, वे सफल नहीं हुए। अब तक तो नहीं, हज़ार साल में हो सकता है, इसलिए मैं खुद से कहता हूँ, यह मस्तिष्क इन सब पर क्यों निर्भर करता है—रसायन, मनावन, सुख? क्या यह मुक्त होने की प्रतीक्षा में है? मैं कहता हूँ, नहीं, खेद है, यह दूसरे प्रकार का पलायन है।

सह०– कुछ और के लिए प्रतीक्षा है।

कृ०– हाँ। अतः क्या मस्तिष्क कोशिकाएँ सभी अतीत स्मृतियों के साथ उनका अभी अन्त कर सकती हैं? यह है मेरा प्रश्न। सर, आपको क्या कहना है?

सह०– मेरा दूसरा प्रश्न है। मुझे अपने छात्रों को पढ़ाना है और यह कार्य मैं तर्क की प्रक्रिया से करता हूँ–तर्क द्वारा अनेक वस्तुएँ स्पष्ट की जाती हैं। साथ ही साथ मैं उसकी सीमा का अनुभव करता हूँ। विशेष रूप से आपके संपर्क में आने पर—कि यह सब बनावटी, सैद्धान्तिक और अत्यधिक सीमित है। इसके बाद हम आपके पास आते हैं तो हम सुनते हैं कि अच्छा क्या है और एक अच्छे बिन्दु से दूसरे पर जाते हैं, पर, हम इन सबके अन्त में पाते हैं कि अभी तक हम कहीं भी सत्य के निकट नहीं हैं। अतः इसका यही मतलब है कि तर्क के उस चक्र में घूमने की बनिस्बत हम इसके चारों ओर घूमें, पर, इससे कोई अन्तर नहीं आता।

कृ०– हाँ, सर, ये अभी केवल व्याख्या भर है और हम इस तर्क से उस तर्क पर आ जाते हैं। इस तरह क्या हम देख पाते हैं कि तर्क की सीमा है? अब क्या मैं उस तर्क को, बिना दूसरे तर्क पर गये छोड़ सकता हूँ, क्योंकि मैं बिल्कुल आरम्भ में ही देख लेता हूँ कि तर्क की अपनी सीमा है—चाहे वह अत्यन्त उच्च स्तर का हो अथवा सीधा–सादा सामान्य–ज्ञान।

सह०– नहीं, इन दोनों की तुलना नहीं की जा सकती क्योंकि दूसरा पूरी तरह से 'लॉजिक' है, जिसे हम समझते हैं। वह सीमित है, पर, यहाँ यह सिर्फ 'लॉजिक' नहीं है क्योंकि हमें कुछ अन्तर्दृष्टि, कुछ प्रकाश प्राप्त होता है; पर, हम इन छोटे अंशों के साथ ही चक्कर लगाते रहते हैं, वहाँ कोई समझ नहीं है।

कृ०– ठीक है। यदि वह ऐसा है तो मैं उस पर शंका करता हूँ। तो क्या आप पूरी अन्तर्दृष्टि चाहते हैं? आपके प्रश्न में यह निहित है।

सह०– जो कुछ हम पा रहे हैं उसी से हमें संतुष्ट होना चाहिए पर, हमको वह आनन्द चाहिए जो विचार को आकार देता है। हम बहुत थोड़ी अन्तर्दृष्टि पाते हैं, पूरी नहीं।

कृ०– मैं आनन्द की बात नहीं कर रहा हूँ, मैं अन्तर्दृष्टि की बात कर रहा हूँ। क्यों, आप इसे सुनेंगे? मैं पूर्ण को प्रस्तुत करूँगा। मैं आपको तार्किक रूप में पूर्ण को दिखाऊँगा। क्या आप सुनेंगे? यह न कहें

कि हाँ यह ठीक है, यह गलत है? असल में हर लेखक, चित्रकार, वैज्ञानिक, कवि, गुरु—ये सभी सीमित अन्तर्दृष्टि रखते हैं। आप और हम आगे आते हैं और कहते हैं- देखिए यह सीमित है और मैं असली, पूर्ण अन्तर्दृष्टि चाहता हूँ, आंशिक नहीं, ठीक?

सह०- हमें इसे समझना है कि पूर्ण अन्तर्दृष्टि क्या है? क्या यह अनुभव है?

कृ०- नहीं। यदि यह अनुभव है तो मुझे संदेह है। यह अनुभव नहीं है।

सह०- तो फिर इसे भीतर से आना है।

कृ०- नहीं, आप देखें, आप पहले ही से शर्त लगा रहे हैं कि क्या हो?

सह०- इसको पहले से नहीं जाना जा सकता।

कृ०- इस बारे में नियम नहीं बना सकते। आप नहीं कह सकते कि यह अनुभव है, यह नहीं है।

सह०- आप हमें बताने जा रहे थे कि यह सब किस तरह पूर्ण बनेगा।

कृ०- यह सब नहीं, अंश पूर्ण को नहीं बनाते। मैं उतना ही तार्किक हूँ जितना आपमें से कोई है (हँसी), मैं सिर्फ यह कह रहा हूँ कि आप गलत ढंग से उस तक पहुँच रहे हैं—अर्थात मेरे विचार में, ऐसा न कहें कि यह अनुभव हैं, यह ज्ञान पर आधारित है, जो ज्ञान पर आधारित है, वह आविष्कार है, सृजन नहीं।

सह०- सर, वे नहीं कह रहे हैं कि यह ज्ञान पर आधारित अनुभव है, बल्कि इसे असली और जाँचा हुआ होना चाहिए।

कृ०- यह वह नहीं है जो कुछ मैं अनुभव करता हूँ। वह असली है। मैं आपकी परेशानी नहीं समझ रहा हूँ। कोई मेरे निकट आता है, मुझे एक कहानी सुनाता है। मैं तन्मय होकर सुनता हूँ। यह कहानी सुन्दर भाषा-शैली में है। मैं उससे सम्मोहित हूँ, कहानी सुनता हूँ और वह दिन-ब-दिन चलती रहती है और मैं इस कहानी में लीन हो जाता हूँ। यह कहानी यों खत्म होती है : ''किस्सा खत्म''।

सह०- हमारे लिए कहानी खत्म नहीं होती, समस्याएँ जारी रहती हैं।

कृ०- आप मेरे मित्र हैं। मैं आपको बताना चाहता हूँ कि लोगों की सीमित अन्तर्दृष्टि हुआ करती है और वह, बिल्कुल जाहिर है। आपका मित्र यहाँ कहता है कि मैं बताऊँगा कि किस तरह से आपके पास पूरी अन्तर्दृष्टि हो सकती है। क्या आप उसे सुनेंगे? बहस न करें, सिर्फ सुनें। आप भिखारी को चावल देते हैं, वह आपसे कुछ आशा नहीं करता था, पर आप उसे देते हैं। इसी तरह वह आपको उपहार देता है और वह कहता है, इसे लो, मुझसे यह मत पूछो कि तुम किसलिए यह दे रहे हो, कौन यह दे रहा है, सिर्फ ले लो। इस तरह मैं आपसे कह रहा हूँ, अन्तर्दृष्टि बुद्धि पर निर्भर नहीं करती, यह ज्ञान पर निर्भर नहीं है। यह किसी प्रकार की स्मृति पर निर्भर नहीं है और यह समय पर निर्भर नहीं है। बोधि समय पर निर्भर नहीं है। समय, स्मृति, याद, कारण—जब वे रहते ही नहीं, तभी पूर्ण अन्तर्दृष्टि होती है। सर, जैसे रात के समय दो जहाज एक दूसरे के पास से गुज़र रहे हों, एक दूसरे से कहता है, 'यह बात है!' और गुजर जाता है। आप क्या करेंगे?

सह०- सर, क्या ऐसा धीरे-धीरे अभ्यास से आता है, अथवा क्या यह तत्काल होता है?

कृ०- अभ्यास का मतलब है स्मृति, समय।

सह०- इस तरह यह तत्काल ही हो सकता है।

कृ०- अरे नहीं, नहीं—सर, ज़रा सुनें। वह मुझसे, यह कहता है और गायब हो जाता है। उसने मेरे पास एक आश्चर्यजनक रत्न छोड़ा है और मैं उसकी सुन्दरता देख रहा हूँ। मैं नहीं कह रहा हूँ कि उसने मुझे क्यों यह दिया, वह कौन है, आदि आदि। उसने यह मुझे दिया और उसने कहा—'मेरे मित्र इसे लो, इसके साथ जियो, और अगर इसे न चाहो तो इसे फेंक दो।' और मैंने उसे फिर दोबारा नहीं देखा। मैं उस रत्न से सम्मोहित हूँ और वह रत्न ऐसी वस्तुओं को प्रकट करने लगता है जिन्हें मैंने पहले नहीं देखा। वह रत्न कहता है—'मुझे और कस कर पकड़ो, तुम और अधिक देखोगे।' लेकिन मैं कहता हूँ कि 'मैं ऐसा नहीं कर सकता।' तो ठीक है। आप उसे मेज़ पर रख देते हैं, शाम को वापस आते हैं और उसकी ओर देखते हैं। पर, वह रत्न धूमिल हो रहा है, इसलिए आपको उसे पकड़े रहना है, आपको उसे सँजो रखना है, उससे प्रेम करें, उसे देखें और जतन से रखें।

मैं किसी को, किसी बारे में भरोसा देने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। हम देखते हैं कि हमारा ज्ञान बहुत ही सीमत है और ज्ञान भारी खतरा हो सकता है, विश्वविद्यालयों, कालेजों को देखने पर लगता है कि यह हम सबमें विष भर सकता है।

सर, भारत आने से ठीक पहले, हाल ही में मैं तीन बिलकुल ताजा टटका ('लेटेस्ट') कम्प्यूटर विशेषज्ञों से मिला। वे कृत्रिम बुद्धि की अधिक गहराई से परीक्षा कर रहे हैं। हम मानव जिन कार्यों को कर सकते हैं उनमें से अधिकांश को कृत्रिम बुद्धि कर सकती है—तर्क करना, हम लोगों में से किसी से भी अधिक ज्ञान रखना। इसमें ब्रिटिश ज्ञान, यूरोपियन ज्ञान, फ्रेंच ज्ञान, रूसी ज्ञान, सभी उपनिषद्, सभी गीताएँ, सभी बाइबिलें, कुरान, सभी कुछ शामिल होगा और यह कार्य करेगा—यह आपको बताएगा कि क्या खाना है और क्या नहीं खाना है, स्वास्थ्य के लिए आप कब सोएँ, कब सहवास न करें, आप जो कुछ कर सकते हैं—इसने पहले से ही काम आरम्भ कर दिया है। मैं जो कुछ कर सकता हूँ यदि वह मशीन, वह सब कुछ कर सकती है तो ऐसी हालत में मनुष्य की बुद्धि के लिए केवल सेक्स और तारों की ओर देखने के अलावा और क्या बचेगा? तो फिर मनुष्य

> ''मैं फिर कहता हूँ कि मेरे कोई शिष्य नहीं हैं। आपमें से हर कोई 'सत्य' का शिष्य है—अगर आप सत्य को समझते हैं और व्यक्ति विशेष का अनुकरण नहीं करते हैं।''
>
> —*'जे. कृष्णमूर्ति : एक जीवनी' से*

का क्या प्रयोजन रहेगा? और मनोरंजन के धंधे—फुटबाल, टेनिस वगैरह में भी वह बदकिस्मती से बड़ा ज़बर्दस्त है। अतः यदि मनुष्य इन सभी मनोरंजनों में, जिनमें धार्मिक मनोरंजन भी है, उनमें डूबा रहा तो फिर मनुष्य कहाँ है? सर, यह बहुत गंभीर प्रश्न है, यह केवल यों ही नहीं।

सह०– यदि मस्तिष्क में परिवर्तन होता है तो यह सवाल नहीं उठेगा क्योंकि वह मौजूदा मस्तिष्क से बहुत आगे होगा क्योंकि वर्तमान मस्तिष्क स्मृति है और मशीन के पास अधिक श्रेष्ठ स्मृति है।

कृ०– इस तरह की एक छोटी चिप्पी 60 करोड़ शब्द रखेगी।

सह०– संसार के सभी पुस्तकालय मशीन में होंगे।

कृ०– ऐसा उनके पास है। अतः मैं क्यों पुस्तकालय जाऊँ, फिर मैं यह सब क्यों सुनूँ? इसलिए, मन बहलाएँ।

सह०– या, बदलें।

कृ०– बिलकुल ठीक, यही प्रश्न है जो मैं पूछता आया हूँ।

सह०– तो हम फिर उसी प्रश्न पर वापस आ गये।

कृ०– क्या इन सब में ध्यान का कोई स्थान है?

> ''ध्यान कल्पना-विलास नहीं होता। ध्यान के खिलने हेतु प्रतिमा, शब्द, बिम्ब के सारे प्रकारों का अंत हो जाना जरूरी है। यह ज़रूरी है कि मन शब्दों और उन पर होने वाली प्रतिक्रिया की दासता से मुक्ति पा ले। विचार ही काल है, समय है, और कोई भी प्रतीक कितना भी पुरातन और गरिमामंडित क्यों न हो, विचार का उसकी पकड़ से मुक्त हो जाना आवश्यक है।''
>
> —*'कृष्णमूर्ति नोटबुक' से*

सह०– हाँ! सर, क्या ऐसा ध्यान है जो बनावटी न हो, जो जानबूझ कर न किया गया हो, जो न कहे कि अभ्यास, अभ्यास, अभ्यास, जिसका इन सबसे कुछ लेना देना न हो। क्योंकि इस तरह मैं धनी आदमी बनने का अभ्यास करता हूँ। मेरा निश्चित प्रयोजन है। अभी जैसा करते हैं, वह ध्यान नहीं है। इसलिए शायद, ऐसा कोई ध्यान है जिसका इन सबसे कुछ लेना-देना नहीं है, और मैं कहता हूँ– कि ऐसा है।

कृ०– क्या हम यहीं रुकें।

सह०– हाँ, हम रुकते हैं, कहानी की तरह।

* * *

(1985 के अन्त में कृष्णमूर्ति जी की राजघाट, वाराणसी की यात्रा, उनकी अन्तिम यात्रा थी। उस समय उन्होंने राजघाट में बौद्धों के साथ तीन 'डायलॉग' किये थे। उनमें से यह पहला 'डायलॉग' 7 नवम्बर, 1985 को हुआ था।)

—*परिसंवाद 3 से साभार*

> ''कर्म में विचार अवश्य सक्रिय हो। जब आपको अपने घर जाना हो तब आप ज़रूर विचार का प्रयोग करें, अथवा जब आपको बस या रेल पकड़नी हो, ऑफिस जाना हो, तब विचार अत्यन्त कुशलता, वस्तुनिष्ठता, निर्वैयक्तिकता से तथा बिना भावनावश हुए कार्य करे। वहाँ विचार बहुत महत्त्वपूर्ण है। परन्तु जब विचार किसी अनुभव को जिससे आप गुज़रे थे स्मृति के माध्यम से भविष्य में ले जा रहा होता है, तब यह कर्म अपूर्ण होता है और इसलिए एक तरह का प्रतिरोध और बाकी चीज़ें सामने आती हैं।''
>
> —*'फ्लाइट ऑव द ईगल' से*

# एक प्रबुद्ध मानव, न कि मशीनी इकाई

''आप जानते ही हैं कि हममें से अधिकांश के लिए शिक्षा का अर्थ यह सीखना है कि हम क्या सोचें। आपका समाज, आपके माता-पिता, आपका पड़ोसी, आपकी किताब, आपके शिक्षक ये सभी आपको बताते हैं कि आपको क्या सोचना चाहिए। ''क्या सोचना चाहिए'' वाली यांत्रिक प्रणाली को हम शिक्षा कहते हैं और ऐसी शिक्षा आपको केवल यंत्रवत्, संवेदनशून्य, मतिमंद और असृजनशील बना देती है। किंतु यदि आप यह जानते हैं कि ''कैसे सोचना चाहिए'', न कि ''क्या सोचना चाहिए'', तब आप यांत्रिक, परंपरावादी नहीं होंगे बल्कि जीवंत मानव होंगे, तब आप महान क्रांतिकारी होंगे—अच्छी नौकरी पाने या किसी विचाराधारा को आगे बढ़ाने के लिए लोगों की हत्या करने जैसे मूर्खतापूर्ण कार्य करने के अर्थ में क्रांतिकारी नहीं बल्कि ठीक-ठीक विचार कैसे करना चाहिए, उस अर्थ में। यह बहुत महत्त्वपूर्ण है। लेकिन जब हम विद्यालय में होते हैं तो इन चीज़ों की ओर कभी ध्यान नहीं देते। शिक्षक स्वयं इसे नहीं जानते! वे तो आपको केवल यही सिखाते हैं कि क्या पढ़ना चाहिए, कैसे पढ़ना चाहिए। वे आपकी अंग्रेजी या गणित सुधारने में व्यस्त रहते हैं। उन्हें तो इन्हीं सब चीज़ों की चिंता रहती है, और फिर पांच या दस वर्षों के बाद आपको उस जीवन में धकेल दिया जाता है जिसके बारे में आपको कुछ पता नहीं होता। इन सब चीज़ों के बारे में आपको किसी ने कुछ नहीं बताया है, या बताया भी है तो किसी दिशा में आपको धकेलने के लिए, जिसका परिणाम होता है कि आप समाजवादी, कांग्रेसी या कुछ और हो जाते हैं। परंतु वे आपको यह कभी नहीं सिखाते, न ही इस बारे में आपका सहयोग करते हैं कि जीवन की इन समस्याओं को कैसे सोचा-समझा जाए, और हां, कुछ देर के लिए इस पर चर्चा कर लेने से काम नहीं चलेगा बल्कि इन सारे वर्षों के दौरान बराबर इसकी चर्चा हो, यही तो शिक्षा है, है न? क्योंकि इस प्रकार के विद्यालय में हमें यही सब तो करना चाहिए। हमें केवल आपको इतनी मदद नहीं देनी कि आप बस छोटी-मोटी परीक्षाएं पास कर लें बल्कि इसमें भी आपका सहयोग करना हमारा कार्य है कि जब आप इस स्थान को छोड़कर जाएं तो जीवन का सामना कर सकें, आप एक प्रबुद्ध मानव बन सकें, न कि मशीनी इकाई, हिंदू, मुसलमान, साम्यवादी या ऐसा ही कुछ और बन जाएं।''

*'शिक्षा क्या है?' से*

''जब सही प्रकार के शिक्षक बनने के लिए हम अपने को समर्पित कर देते हैं, तब हम अपने घर तथा स्कूल के जीवन के बीच दीवारें नहीं खड़ी करते, क्योंकि सर्वत्र हमारा संबंध स्वतंत्रता तथा प्रज्ञा से होता है। हम धनी तथा निर्धन सभी के बच्चों को एक समान देखते हैं तथा प्रत्येक बच्चे को एक ऐसा व्यक्ति मानते हैं जिसका अपना स्वभाव, अपनी विरासत है, महत्त्वाकांक्षाएँ हैं। हमारा संबंध किसी वर्ग से नहीं होता, न तो शक्तिशाली से और न निर्बल से; हमारा संबंध केवल व्यक्ति की स्वतंत्रता तथा अखंडता से होता है।''

*'शिक्षा एवं जीवन का तात्पर्य' से*

**'स्वयं से संवाद'**
कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया
राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001
ईमेल : studycentre@rajghatbesantschool.org

संपादक : मुकेश
सलाहकार : शक्ति

अनुवाद : प्रो. कृष्णनाथ

'कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया' के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. पी. कृष्णा द्वारा सत्तनाम प्रिंटिंग प्रेस, एस–1/208 के–1 नयी बस्ती, पांडेयपुर, वाराणसी 221 002 से मुद्रित एवं कृष्णमूर्ति फाउंडेशन इंडिया, राजघाट फोर्ट, वाराणसी 221 001 (उ. प्र.) से प्रकाशित। संपादक : मुकेश